INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

हिन्दीं रिपोर्ताजों में प्राकृतिक आपदाओं के वीभत्स दृष्यों का यथार्थ चित्रण

षोध छात्र – दिलराज मीना

हिन्दी विभाग,

जयनारायण व्यास विष्वविद्यालय,

जोधपुर, राजस्थान।

रिपोर्ताज आधुनिक हिन्दी गद्य की नवीन विद्या है। रिपोर्ताज अंग्रेजी भाषा के'रिपोर्ट' शब्द का समानार्थी फ्रांसींसी शब्द है। रिपोर्ट का अर्थ घटना–**विशेष** का विवरण है। हिन्दी में इसे 'सूचनिका' कहा गया है। ''किसी घटना की रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रुप को रिपोर्ताज कहा जाता है।''[1] अर्थात किसी घटना को साहित्यिक कलात्मकता के रुप में अभिव्यक्त करना रिपोर्ताज कहलाता है। घटना के कथ्य को सत्यता के साथ अभिव्यक्त करके मानवीय संवेदना को जन्म देना इस विद्या की कलात्मकता हैं। द्वितिय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं ने मानवीय चेतना को संत्रांस, विसंगतियॉ तथा कुंण्ठामय अनुभूतियाँ प्रदान की। इन्ही भयानक दृश्यों का यथार्थ जनता तक पहुँचाने के लिए रिपोर्ताज विद्या का प्रयोग किया गया। इस विद्या के केन्द्र मे घटना होती हैं जिसमें युग सत्य, युग संघर्ष तथा मनुष्य और समसामयिक देश–समाज अभिव्यक्त होता हैं। प्राकृतिक आपदाओं जैसी वीभत्स घटनाएं रिपोर्ताज में मानवीय संवेदना से जुड़कर चिरस्थायी साहित्य में बदल जाती है। इसमें आज का यथार्थ और बीते कल का रस होता है। हिन्दी में इस विद्या का आरंभ द्वितीय विश्वयुद्ध से माना जाता हैं। प्रथम रिपोर्ताज 1938 में शिवदान सिंह चौहान कृत 'लक्ष्मीपुरा' रुपाभ पत्रिका में प्रकाशित हुआ। लेकिन ऐसा नही है कि इससे पहले रिपोर्ताज लिखे ही नही गये हो 1897 में चड़ीप्रसाद सिंह ने 'युवराज की यात्रा' शीर्षक से रिपोर्ताज लिखा जिसमें प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा का यथार्थ वर्णन किया है। कन्हैया लाल 'मिश्र'प्रभाकर भी बहुत पहले से रिपोर्ताज लिखते आ रहे थे। रिपोर्ताज विद्या का महत्व समझकर 'हंस' पत्रिका में साहित्यकारों ने प्रतिमास रिपोर्ताज प्रकाशित करवायें। हिन्दी में वास्तविक रिपोर्ताज लेखन रांगेय राघव से माना जाता है उनका रिपोर्ताज 'तूफानो के बीच' में बगांल के अकाल से पीड़ित मानव जीवन का यथार्थ वर्णन किया गया है।इसके बाद इस विद्या के प्रति लेखकों का अधिक रुझान हुआ। युद्धों की विभीषका भी साहित्य में नवीन कला रुपों को जन्म देती है रिपोर्ताज विद्या इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं। हिन्दी साहित्य में अधिकतर रिपोर्ताज युद्ध, अकाल, बाढ़ जैसी घटनाओं पर लिखे गये हैं। रिपोर्ताज लेखकों ने प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त क्षैत्रों में

फैलीभूखमरी, महामारी, विना**श**कारी दृ**श**्यों में सिसकती जिदंगी, राजनैतिक छल एवं आम आदमी की त्रासदीपूर्ण विड़म्बना, सामाजिक अंधवि**श**्वास एवं जातिवाद, धार्मिक पाखण्ड़ एवं संस्कृति आदि का यथार्थ वर्णन किया गया है। भारतभूमि पर प्रत्येक दूसरे–तीसरे वर्ष में कहीं न कहीं अकाल और बाढ़ का विकराल रुप देखने को मिल जाता हैं जिससे आम–आदमी के जीवन में भूखमरी, महामारी, मृत्यु जैसीं वीभत्स समस्याओं का आगमन हो जाता हैं। वि**श**्व के सभी दे**श** ने आज भलेहि तकनीकिकरण से दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर लिया हो लेकिन अकाल, बाढ़ जैसी समस्याओं से आज भी निजात नही पा सके हैं। भारत यायावर ने प्राकृतिक आपदाओं में मनुष्य हस्तक्षेप का अभाव बताते हुए लिखा है कि ''यह है प्रकृति का विना**श**कारी, प्रलयकारी, शक्ति स्वरुप, जिस पर मनुष्य का कोई भी व**श** नही''[2] यह बात सत्य है कि प्राकृतिक आपदाओं पर मनुष्य का व**श** नही चलता लेकिन मनुष्य प्रकृति के साथ सकारात्मक व्यवहार अपना कर कुछ हद तक आपदाओं को कम कर सकता हैं। मनुष्य और प्रकृति का सही तारतम्य न होने के कारण अर्थात मनुष्य का प्रकृति के अनुरुप कार्य न करने से प्राकृतिक आपदाओं का आगमन अधिक होता है तथा प्रकृति प्रदत्त अनेक समस्याओं का जन्म होता हैं। आज जहाँ भी अकाल और बाढ़ की घटना होती है वहाँ का मानव–जीवन तबाह हो जाता हैं लाखों लोग मरते है और करोड़ों बेघर हो जाते हैं तथा वर्षों तक मनुष्य इसकी भरपाई नही कर पाता हैं। ऐसे संकट के समय में मनुष्य अपनी मनुष्यता खोता नजर आता हैं। बाढ़ और अकाल से पीड़ित मनुष्य की संकुचित मनस्थिति का उल्लेख करते हुए भारत यायावर लिखते है कि ''ये ऐसी विभीषिकाएं है जो मनुष्य को अपने आघात से अभावग्रस्त ही नही बनाती, ब्लकि उसे कभी–कभी अमानवीयता भी बना देती हैं। कहीं तो मनुष्य इन परिस्थितियों में पड़कर अपने धैर्य, अपनी सहानुभूति, अपनी शक्ति, अपनी विनोदप्रियता की वास्तविक पहचान उभारता है और कहीं अपनी निरीहता, स्वार्थपरता, आसक्ति, मूल्यहीनता आदि का परिचय देता हैं।''[3] स्वयं का अस्तित्व बचाने के लिए पत्नि, बेटा–बेटी, भाई–बंधुओं जैसे पवित्र रि**श**्तों, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को पेट की भूख मिटाने के लिए स्वार्थ रुपि अग्नि में जला कर राख कर देता है उस समय व्यक्ति केवल स्वयं को बचाने में लगा रहता है। रुपलाल ने अपनी पत्नि प्राणबाला की हत्या अकाल से ग्रसित, पीड़ित मनस्थिति के कारण की। बाढ़, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जीवंत और मार्मिक चित्रण जैसा रिपोर्ताज विद्या में मिलता है वैसा साहित्य की अन्य विद्याओं में नही मिलता हैं। यही कारण है कि रिपोर्ताज विद्या को पत्रकारिता से अधिक महत्व एवं स्थान हिन्दी साहित्य में दिया गया। द्वितीय महायुद्ध के समय 1942 में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा जिससे बंगाल की शस्य श्यामला भूमि भूख–प्यास, रोग–वियोग और मृत्यु के ताड़व से कराह उठी थी। रांगेय राघव ने अपने रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' में बंगाल के अकाल का यथार्थ चित्रण किया। बंगाल के अकाल के वीभत्स दृ**श**्यों का लेखक द्रष्टा और भोक्ता दोनों था इसलिए उनकी कलम से लिखे गये प्रत्येक शब्द में मानव क्रंदन का स्वर फूटता है। भूख, रोग और मृत्यु की पीड़ा का

वीभत्स दृश्य लेखक को करुणा के अन्तस्थ तक पहुँचा देता है और दो बूंद आँसूओं से पीड़ित लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है। रांगेय राघव ने अपने रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' में लिखा है कि''यहाँ भूखे मरतों को देखकर मनुष्य को खुद भूख नही लगती, रोना आता है।''[4] अकाल का भयंकर दृश्य लेखक को रोने पर मजबूर कर देता है। लेखक की दृष्टि में यह अकाल केवल प्राकृतिक आपदा भर नही था अपितु राजनैतिक सत्ता की कमजोरी और सत्ता के रखैलों की शोषणपरक नीति का परिणाम था। सरकार द्वारा अकाल पीड़ित लोगों के लिए समय पर अन्न–जल की व्यवस्था न कर पाना बंगाल के विनाश का कारण रहा हैं। भ्रष्टाचार और शोषण के कारण ही सरकारी सहायता सामग्री भोजन, वस्त्र, दवा पीड़ित लोगों तक नही पहुँच पायी जिसके कारण बंगाल आम–आदमी की स्थिति सूखे नर कंकाल सी हो गई मनुष्य के नाम पर केवल देह नजर आती है। एक तरफ किसान, मजदूर, स्त्री–पुरुष, बच्चे–जवान, हिन्दू–मुस्लिम आदि सभी अन्न के लिए तरस रहे थे, मर रहे थे दूसरी तरफ सत्ता के भूखे, भूखों के नाम पर सत्ता में आने के लिए लोगों को बरगला रहे हैं। सफेदपोश नेता आज भी घटना–दुर्घटनाओं में अपनी झूठी दिलासा देने के लिए पहुँच जाते हैं। आज पीड़ित, असहाय लोगों को राजनीति में केवल वोट बैंक की दृष्टि से देखा जाता हैं। डॉ. रांगेय राघव ने अन्न के अभाव में भूख से तड़पते, मरते लोगों का यथार्थ चित्रण करते हुए लिखा है कि ''घर खाली थे। बाजार खाली थे। चारों और प्राणों की ममता दोनों हाथ उठाकर हाहाकार कर रही थी। लोग घरों में मरते थे। बाजार में मरते थे। राह में मरते थे जैसे जीवन का अन्तिम ध्येय मुट्ठी भर अन्न के लिए तड़प–तड़प कर मर जाना ही था।''[5] देश में जहाँ भी अकाल की काली छाया मंडराने लगती है वहाँ अन्न–जल का अभाव होना स्वाभाविक है इसलिए बंगाल में अकाल पड़ने के कारण घरों, बाजारों में धीरे–धीरे अन्न का अभाव होता गया और जो कुछ बाजार में था वह इतना महंगा कर दिया कि आम–आदमी खरीद नही सकता और सरकारी सहायता उनके पास अभी पहुँची नही थी ऐसी परिस्थिति में लोगों के पास तड़पने और मरने के अलावा कोई रास्ता नही बचा। बच्चें माता–पिता की गोद में तड़प–तड़प कर मरने लगे धीरे–धीरे बंगाल के जवान, बूढ़ढें मौत के शिकार होते गये। देखते–देखते कई माँओं की कोख सूनी होने लगी और बंगाल की भूमि पर शरीर के फफोलों की तरह कब्रें दिखाई देने लगी। एक तरफ मृत्यु का ताडंव दूसरी और बिमारीयों के प्रकोप ने अकाल को और भी भयावह रुप देने का काम किया। लेखक ने इस भयावह स्थिति का जिम्मेदार सरकार और मानव के अमानवीय व्यवहार को मानते हुए लिखा हैं कि ''आज यदि हमें लज्जा हो सकती है तो यहीं कि हमारी ही भूमि में ऐसे लोग रहते है, जिन्होंने हमें इस दशा पर मजबूर किया''[6] यह कैसी विद्रूपता है जो लोग कल तक बंगाल की धरती पर कपड़ा बुनकर सारे बंगाल का तन ढ़कते थे आज स्वयं नंगा घूम रहा है, जो किसान दिन–रात अपनें और पूँजीपतियों के खेतों में अन्न पैदा करके सभी का पेट का भरता था आज वह अन्न के अभाव में तड़प–तड़प कर मर रहा हैं। पूँजीपतियों और सूदखोरों ने अधिक लाभ कमाने के लिए आम जन की गाढ़ी कमाई को

शोषण, छल–पाखंण्ड़ से अपने गोदामों में भर लेते है और बाढ़, अकाल जैसे मौकों पर स्वार्थ साधने तथा मोटे दामों में बेचकर दोगुना लाभ कमाने का काम करते हैं। उनके यहाँ मानवीयता पैसे से मिलती नजर आती है। शोषणकारी और भ्रष्ट मीड़ियाकर्मी अकाल पीड़ितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना तो दूर अपितु अकाल की सच्चाई पर पर्दा ड़ालने का प्रयास करते है। सरकार द्वारा अकाल या बाढ़ में आम जन की स्थिति पूछने पर इनका जवाब यह होता है ''अकाल नही है। मौतें नही हुई। खबरे झूठी है अकाल की बात करने वाले गद्दार है, स्वार्थी है। सारे जिले में सिर्फ दो मौतें हुई–एक बिमार था, दूसरा भिखमंगा।''[7] यह है वास्तविक अमानवीयता का दस्तावेज। आज भी हमारे समाज, राजनीति, प्रशासन आदि में ऐसे लोग है जो मरे की छाती पर भोजन करने से भी नही हिचकचाते हैं। अकाल जब भी आता है सब कुछ विरान कर जाता है यहीं हाल बंगाल का हुआ। भारतभूमि पर केवल अकाल से ही जन हानि नही होती अपितु बाढ़, भूकंप, आग, महामारी आदि से भी जन–धन की अपार हानि होती हैं। फणीश्वर नाथ रेणु का रिपोर्ताज 'ऋणजल–धनजल' सूखे ओर बाढ़ की दो वीभत्स दुर्घटना का ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। रेणुजी ने बिहार में सन् 1966 में पड़े भयानक सूखे और सन् 1975 में आयी प्रलयंकारी बाढ़ का मार्मिक चित्रण अपने रिपोर्ताजों में किया हैं। कोसी नदी को बिहार का शोक इसीलिए कहा जाता है कि वह जब भी उफान पर आती है सारे बिहार को तहस–नहस कर जाती है आज भी लोग उसके भय से कांपते हैं। जल प्रलय की स्थिति में लोगों के मुँह से यही सुनाई पडता हैं ''घुस गया.....डूब गया.....डूब गया....बह गया.... वह देखिए–आ रहा है....मृत्यु का तरल दूत''[8] कोसी का बाढ़ आते ही लोग भय से काँपने लगते है तथा अपनी और परिवार की जान बचाने में जुट जाते है। बाढ़ में चारों और पानी ही पानी दिखाई देता हैं। पानी के तेज बहाव में किसी की गाय, भैस बह जाती है तो किसी का अनाज। हरियाली का कहीं नामोंनिशा तक नही होता है। धान, मकई, बाजरा आदि खाद्य फसलें कोसी के जल प्रलय में नष्ट हो गई हैं चारों और बच्चों, जवानों, जानवरों की चित्कारों ने बिहार के वातावरण को और भी भयावह बना दिया हैं। लोग घरों को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाने लगे है कुछ अन्न की तलाश में जमींदारों के यहाँ चक्कर काट रहे हैं लेकिन कहीं कुछ नही मिलता। एक पिता, बेटा को खाने के लिए कुछ नही मिलता है तो निराश मन से यह कह कर लोट जाते है कि 'चलो वापिस! घर में भूखे बच्चे है, बूढ़े बाप है, माँ है....बीबी. ...साथ मरेंगें।' ऐसी परिस्थितियों में भोली–भाली जनता पर कोई ध्यान देता है उनको भाग्य भरोसें छोड़ दिया जाता हैं सरकार, पूँजीपतियों और भ्रष्ट नेताओं के लिए तो ऐसे अवसर किसी महोत्सव से कम नहीं होता क्योंकि ऐसे मौकों पर ही यह अपना स्वार्थ साधने का काम करते हैं। पूँजीपति पीड़ितों की इज्जत आबरु लूटते है और सरकार उन्हें रोटी का टुकड़ा दिखाकर वोट माँगती है। सरकार जो कुछ सहायता के नाम पर भेजती है उन्हें बिचौलिया खा जाते है और जनता तरसती रहती रह जाती है। रेणुजी ने 'हड्डियों के पुल'' रिपोर्ताज में बाढ़ खत्म होने के बाद पीड़ित बिहार वासियों की भूखमरी और गरीबी के मार्मिक वर्णन निम्न शब्दों

में किया हैं। ''सारे जिले की धरती पर हड्डियाँ बिखर रही हैं। आसमान में गिद्धों का दल चक्कर मार रहा है, चील झपट्टे मार रहे है, कुत्तें, गीदड़ों और दम तोड़ते इन्सान में छीना झपटी हो रही है.....हवा में लाशों की सड़ांध फैल रही हैं।''[9] बाढ़ के कारण बिहार में मरे हुए जानवरों की हड्डियों चारों और फैली हुई थी तथा सड़ांध ने कई बिमारीयों को न्यौता दिया। आज की जनता जागरुक है इसलिए प्राकृतिक आपदाओं की इतनी यंत्रणा नही भोगनी पड़ती है। आज आम जनता यह जान गई है कि भूखे रहना और मरना हमारा अधिकार नही है। आजादी के बाद जनता ने केवल आजाद रहना सीखा था अपने अधिकारों को नहीं। आज की सरकारें जनता के जागरुक होने के कारण बाढ़, अकाल जैसी घटनाओं में त्वरित सहायता करती है जिससें आपदा प्रभावित क्षैत्रों में जन–धन की हानि नहीं होती हैं।

जनता को जागरुक करने में साहित्य विधाओं का काफी बड़ा योगदान रहा है। रिपोर्ताजकारों ने आपदा प्रभावित क्षैत्रों में जाकर पीड़ितों के दुःख–दर्द को समझा है तथा उनकी सेवा करके साहित्य में मानवीयता के अनूठे स्वरुप को स्थापित किया हैं। सच्चा साहित्यकार जनता के सुख–दुःख को भोगकर ही उनकी पीड़ा को अभिव्यक्त कर सकता है। रिपोर्ताज लेखकों ने रिपोर्ताज विधा के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित, शोषित आम–आदमी की वास्तविक स्थिति को जनता तथा सरकार तक पहुँचाने का काम किया हैं।

संदर्भ–ग्रंथ

1. जलते और उबलते प्रश्न – डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय – पृष्ठ संख्या 232

2. फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज – भारत यायावर – पृष्ठ संख्या 52

3. फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज – भारत यायावर – पृष्ठ संख्या 44

4. तूफानों के बीच – रांगेय राघव – पृष्ठ संख्या 21

5. तूफानों के बीच – रांगेय राघव – पृष्ठ संख्या 13

6.तूफानों के बीच – रांगेय राघव – पृष्ठ संख्या 14

7. समय की शिला पर–फणीश्वरनाथ रेणु – संपादन – भारत यायावर – पृष्ठ संख्या 61

8. ऋणजल–धनजल – फणीश्वरनाथ रेणु – पृष्ठ संख्या 24

9. समय की शिला पर–फणीश्वरनाथ रेणु – संपादन – भारत यायावर – पृष्ठ संख्या 63

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM